[श्रीमती सुचेता कृपलानी]

और मुसीबतें बर्दाश्त कीं, कई प्रकार के त्याग और कुर्बानियों कीं, फिजीकल टार्चर बर्दाश्त किया, उन के परिवार वालों को भी अनगिनत कष्ट और असुविधायें सहनी पड़ीं । आज हमें उन लोगों को याद रखना चाहिये । चाहे मेरी आवाज कितनी छोटी हो, मैं उन के प्रति अपना सम्मान और श्रद्धा अर्पित करती हूं । मैं अपने राष्ट्र से कहना चाहती हूं कि उन लोगों के लिए, या उन के परिवारों के लिए, हम जो कुछ भी करें, वह उन की सेवाओं की तुलना में यथेष्ठ नहीं हो सकता है । उन लोगों की जो-जो मांगें हैं, उन को सौ फीसदी पूरा करने का प्रयास करना चाहिये ।

ARREST OF MEMBER

SHRI KIKAR SINGH

MR. SPEAKER : I have to inform the House that I have received the following wireless message, dated the 6th August, 1968 from the Superintendent of Police, Bhatinda :—

"Shri Kikar Singh, Member, Lok Sabha, and resident of Haji Rattan, has been arrested *vide* D.D.R. No. 28, dated the 5th August, 1968 under Sections 107/151 Criminal Procedure Code."

HALF-AN-HOUR DISCUSSION.—*Contd.*

HOMES FOR FREEDOM FIGHTERS IN WEST BENGAL—*Contd.*

श्री रबि राय (पुरी) : अध्यक्ष महोदय, मैं श्री सुचेता कृपलानी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने इस आध घंटे की चर्चा के जरिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के वीर सेनानियों के पुनर्वास का सवाल उठाया । जब मैं उन का भाषण सुन रहा था, तो मुझे इस बात पर शर्म महसूस हो रही थी कि सरकार ने स्वयं इस बारे में कोई कदम क्यों नहीं उठाया, जिस के कारण माननीय सदस्या को यह बहस उठाने की आवश्यकता पड़ी । अध्यक्ष महोदय, हम लोग आप के नेतृत्व में सोवियत यूनियन गये थे । वहां के लेनिनग्राड शहर का हिटलर की नात्सी सेनाओं ने 900 दिन तक सीज किया था । उस शहर की रक्षा करते हुए लाखों की तादाद में जो वीर सेनानी मृत्यु को प्राप्त हुए, आप के नेतृत्व में हम लोग उन के कबरिस्तान को देखने के लिये गये थे । उस को देख कर हम लोगों के मनों पर यह प्रभाव पड़ा कि सोवियत यूनियन की सरकार और जनता किस प्रकार अपने राष्ट्रीय युद्ध के वीर सेनानियों का सम्मान और आदर करती है । लेकिन हिन्दुस्तान के स्वतन्त्रता संग्राम में हमारे जिन क्रान्तिकारियों ने त्याग और कुर्बानियां कीं और वीर गति पाई, हमने कलकत्ता, बम्बई या लखनऊ आदि किसी भी स्थान पर उन का कोई स्मारक, या उन की स्मृति में कोई म्यूजियम नहीं बनाया ।

अध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि आज ही इस सदन में पार्लियामेंट के मेम्बरों की तन्ख्वाह, भत्ते और अन्य सुविधायें बढ़ाने सम्बन्धी प्रस्ताव रखा गया है । सुरेन्द्र बाबू ने कहा कि मंत्रियों को जो तन्ख्वाह, भत्ता और आराम मिलता है, अब पार्लियामेंट के मेम्बरों को भी वही मिलेगा । हम को शर्म आनी चाहिए कि हम लोग अपने वेतन, सुविधायें और शानो-शौकत को बढ़ाने के लिए तो प्रस्ताव ला रहे हैं, लेकिन हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन में जिन क्रान्तिकारियों ने त्याग और कुर्बानियां कीं, उन के बारे में न तो हमें फिक्र है और न सरकार को फिक्र है ।

इस लिए यह सारे सदन का सवाल है, सारे राष्ट्र का सवाल है । मैं चाहता हूं कि माननीय मंत्री, श्री शुक्ल इस सदन को यह आश्वासन दें कि हमारे जो क्रान्तिकारी बारह, पन्द्रह या बीस साल की कैद काट चुके हैं और जिनकी उम्र साठ साल से ज्यादा हो गई है उन के लिए पेन्शन और मैडिकल फैसिलिटीज की व्यवस्था की जायेगी । जिन लोगों ने देर से शादी की,